प्रभावक आचार्य श्रीजिनऋद्धिसूरि

[भँवरलाल नाहटा]

सुविहित शिरोमणि महामुनिराज श्री मोहनलाल जी महाराज के स्वहस्त दीक्षित प्रशिष्य श्रीजिनऋद्धिसूरि जी विद्वान, सरल-स्वभावी और तप जप रत एक चरितवान् महात्मा थे। उनका जन्म चूरु के ब्राह्मण परिवार में हुआ था और वहीं के यतिवर्य चिमनीरामजी के पास आपने दीक्षा ली थी, आपका नाम रामकुमारजी था। आपके बड़े गुरु भाई ऋद्धिकरणजी भी उच्चकोटि के त्याग वैराग्य परिणाम वाले थे इन्होंने देखा कि उनसे पहले मैं त्यागी बन जाऊं अन्यथा गद्दी का जाल मेरे गले में आ जायगा। आप चुरू से निकल कर बीकानेर गये, मंदिरों व नाल में दादा साहब के दर्शन कर पैदल ही चलकर आबू जा पहुँचे क्योंकि रेल भाड़े का पैसा कहां था? वहाँ से एक यतिजी के साथ गिरनारजी गये। और फिर सिद्धाचलजी आकर यात्रा करने लगे। श्रीमोहनलालजी महाराज के पास सं० १९४९ आषाढ़ सुदि ६ को दीक्षित होकर रामकुमारजी से श्रीऋद्धिमुनि जी बने, आपको श्रीयशोमुनि जी का शिष्य घोषित किया गया। आपने दत्त चित होकर विद्याध्ययन किया, तप जप पूर्वक संयम साधना करते हुए गुरु महाराज श्री सेवा में तत्पर रहे जब तक मोहनलालजी महाराज विद्यमान थे, अधिकांश उन्होंने आपको अपने साथ रखा, और उनका वरद हाथ आपके मस्तक पर रहा। सात चौमासे साथ करने के बाद अलग विचरने की भी आज्ञा देते थे। सं० १९५९ में गुरु श्री यशोमुनि जी के साथ रोहिड़ा प्रतिष्ठा कराई। अनेक स्थानों में विचर कर तीर्थ यात्राएँ की। सं० १९६१ में बुहारी में प्रतिष्ठा कराने आप और चतुरमुनि जी गए। प्रतिष्ठा समय आगंतुक लोगों ने उत्सव में ग्रामोफोन के अश्लील रिकार्ड बजाने प्रारंभ किये। और मना करने पर भी न माने तो आप मौन धारण कर बैठ गए। ग्रामोफोन भी मौन हो गया और लाख उपाय करने पर भी ठीक न हुआ। आखिर आपसे प्रार्थना की और अहाते से बाहर जाने पर ठीक हो गया। सं० १९६३ में मोहनलालजी महाराज का स्वर्गवास हो गया तो कठोर चौमासा कर आपने गुजराती-मारवाड़ी का क्लेश दूर कर परस्पर संप कराया। मोहन लालजी म० के चरणों की प्रतिष्ठा करवाई। मारवाड़ी साथ का नया मन्दिर हुआ, चमत्कार पूर्ण प्रतिष्ठा करवाई यहीं यशोमुनि जी को आचार्य पद पर स्थापित करने का सारे साधु समुदाय ने निर्णय किया। झगड़िया संघ में यात्रा कर कड़ोद में सं० १९६४ माघ में शांतिनाथ भ० की प्रतिष्ठा कराई। व्यारे में अजितनाथ भ० की वैशाख में तथा सरभोण में जेठ महीने में प्रतिष्ठा करवायी। सूरत-नवापुरा में शामला पार्श्वनाथ की प्रतिष्ठा की। आपके उपदेश से उपाश्रय का जीर्णोद्धार हुआ। गुरु महाराज की आज्ञा से मांडवगढ़ पधार कर योगोद्वहन किया। सं० १९६६ मार्गशीर्ष शुक्ल ३ के दिन ग्वालियर में आपको गुरुमहाराज ने पन्यास पद से विभूषित किया। गुरुमहाराज पूर्व देश यात्रार्थ पधारे आपने जयपुर आकर चौमासा किया बड़े भारी उत्सव हुए। दीक्षा के बाद प्रथम बार चूरु में आकर २० दिन स्थिरता की तेरापंथियों को शास्त्र चर्चा में निरुत्तर किया। नागोर के संघ में अनैक्य दूर कर संप कराया, दीक्षा महोत्सवादि हुए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सं० १९६७ का चातुर्मास पन्यास जी ने कूचेरा किया। यज्ञ-होम, शांतिपाठ और ठाकुरजी जी सवारी निकलने पर भी बूंद न गिरी तो आपश्री के उपदेश से जैन रथयात्रा निकली, स्नात्र पूजा होते ही मूसलधार वर्षा से तालाब भर गए। वहां से तीन मील लूणसर में भी इसी प्रकार वर्षा हुई तो कूचेरा के ३० घर स्थानकवासियों ने पुनः मन्दिर आम्नाय स्वीकार कर उत्सवादि किए, दोढसौ व्यक्तियों के संघ ने प्रथमबार शत्रुञ्जय यात्रा की। तदनन्तर फलौदी, पुष्कर, अजमेर होकर जयपुर पधारे, उद्यापनादि उत्सव हुए। पंचतीर्थी कर अनेक नगरों में विचरते बम्बई पधारे। दो चातुर्मास कर पालीताना पधारे ८१ आंबिल और ५० नवकारवाली पूर्वक तिन्नाणुं यात्रा की। सं०१९७१ का चातुर्मास खंभात में करके मोहनलालजी जैन हुन्नरशाला और पाठशाला स्थापित की। सं० १९७२ में सूरत चातुर्मास में उपधान तप एवं अनेक उत्सव हुए। सं १९७३-७४ लालबाग बम्बई का उपधान कराया, उत्सवादि हुए। पालीताना पधार कर एकान्तर उपवास और पारणे में आंबिल पूर्वक उग्रतपश्चर्या को कई वर्षों से मन्दिर के प्रति श्रद्धान्तु बने स्थानकवासी मुनि रूपचन्दजी के शिष्य गुलाबचन्द जी ने अपने शिष्य गिरीधारीलालजी के साथ आकर आपके पास सं० १९७५ वै० शु० ६ को दीक्षा ली। उनका श्री गुलाबमुनि और उसके शिष्य का गिरिवर मुनि नाम स्थापन किया। तदनन्तर सं० १९७६ का चौमासा बम्बई कर खंभात आये और अठाई-महोत्सवादि के बाद सूरत पधारे।

सूरत में दादागुरु श्रीमोहनलालजी के ज्ञानभंडार को सुव्यवस्थित करने का बीड़ा उठाया और ४५ अलमारियों को अलग-अलग दाताओं से व्यवस्था की। आलोशान मकान था, उपधान तप में माला की बोली आदि के मिलाकर ज्ञानभण्डार में तीस हजार जमा हुए। मोहनलालजी जैन पाठशाला को भी स्थापना हुई। सं० १९७९ खंभात व १९८० कड़ोद चातुर्मास किया। वहाँ लाडुआ श्रीमाली भाइयों को संघ के जीमनवार में शामिल नहीं किया जाता था, पन्यासजी ने उपदेश देकर भेदभाव दूर कराया। सं० १९८१ वलसाड़ करके नंदरबार पधारे आपके उपदेश से नवीन उपाश्रय का निर्माण हुआ। प्रभु प्रतिष्ठा, ध्वजदंडारोहण आदि बड़े ही ठाठ-माठ से हुए। सं० १९८२ व्यारा चौमासे में भी उपधान आदि प्रचुर धर्मकार्य हुए। टांकेल गाँव में मन्दिर और उपाश्रय निर्माण हुए, और भी ग्रामानुग्राम विचरते अनेक प्रकार के शासनोन्नति के कार्य किये। सं० १९८३ वैशाख में सामटा बन्दर में मन्दिर की प्रतिष्ठा करवाई। सं० १९८३-८४ के चातुर्मास बम्बई हुए। धोलवड़ में मन्दिर व उपाश्रय उपदेश देकर करवाया। सं० १९८५ सूरत, १९८६ कठोर में चौमासा किया। आपने चार और पाँच उपवास से एक-एक पारणा करने की कठिन तपस्या तीन महीने तक की। फिर सायण होकर सूरत आदि अनेक स्थानों में विचरते हुए सं० १९८७ का चातुर्मास दहाणु किया। बोरड़ी पधार कर उपाश्रय के अटके हुए काम को पूरा कराया। फणसा में उपाश्रय-देहरासर बना। गुजरात में स्थान-स्थान में विचर कर विविध धर्म कार्य कराये। मरोली में उपाश्रय हुआ। खंभात की दादावाड़ी की चारों देहरियों का जीर्णोद्धार होने पर सूरत से विविध गांवों में विचरते हुए खंभात पधार कर दादावाड़ी की प्रतिष्ठा सं० १९८८ ज्येष्ठ सुदि १० को की। कटारिया गोत्रीय पारेख छोटालाल मगनलाल नाणावटी ने प्रतिष्ठा, स्वधर्मीवत्सल आदि में अच्छा द्रव्य व्यय किया। चातुर्मास के बाद मातर तीर्थ की यात्रा कर सोजित्रे पधारने पर माणिभद्रवीर की देहरी से आकाशवाणी हुई कि खंभात जाकर माणेकचौक के उपाश्रय स्थित माणिभद्र देहरी को जीर्णोद्धार का उपदेश दो। खंभात में पन्यासजी उपदेश से सं० १९८९ फा० सु० १ को जीर्णोद्धार सम्पन्न हुआ। कार्तिक पूर्णिमा के दिन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

महोदयमुनि को दीक्षा देकर श्री गुलाबमुनिजी के शिष्य बनाये। अनेक गाँवों में विचरते हुए अहमदाबाद पधारे। संघ की वीनति से जीर्णोद्धारित कंसारी पार्श्वनाथजी की प्रतिष्ठा खंभात जाकर बड़े समारोह से कराई। अहमदाबाद पधार कर दादासाहबकी जयन्ती मनाई, दादावाड़ी का जीर्णोद्धार हुआ। अनेक स्थान के मन्दिर-उपाश्रयों के जीर्णोद्धारादि के उपदेश देते हुए दवीयर पधार कर प्रतिष्ठा कराई। घोलवड में जैन बोर्डिंग की स्थापना करवायी। सं० १९९१ का चातुर्मास बम्बई किया। पन्यास श्रीकेशरमुनिजी ठा० ३ महावीर स्वामी में व कच्छी वीसा ओसवालों के आग्रह से श्रीऋद्धिमुनिजी ने माँडवी में चौमासा किया। वर्द्धमानतप आंबिल खाता खुलवाया। अनेक धर्मकार्य हुए। सं० १९९२ लालवाड़ी चौमासा किया भाद्रव दो होने से खरतरगच्छ और अंचलगच्छ के पर्यूषण साथ हुए। दूसरे भाद्रव में गुलाबमुनिजी ने दादर में व पन्यासजी ने लालवाड़ी में तपागच्छीय पर्यूषण पर्वाराधन कराया। पन्यास केशरमुनिजी का कार्तो सुदि ६ को स्वर्गवास होने पर पायधुनी पधारे।

जयपुर निवासी नथमलजी को दीक्षा देकर बुद्धिमुनिजी के शिष्य नंदनमुनि नाम से प्रसिद्ध किये। पन्यासजी का १९९३ का चातुर्मास दादर हुआ। ठाणा नगर में पधार कर संघ में व्याप्त कुसंप को दूर कर बारह वर्ष से अटके हुए मन्दिर के काम को चालू करवाया। सं० १९९४ मिती वै० सु० ६ को ठाणा मन्दिर की प्रतिष्ठा का मूहूर्त्त निकला। यह मन्दिर अत्यन्त सुन्दर और श्रीपाल चरित्र के शिल्प चित्रों से अद्वितीय शोभनीक हो गया। प्रतिष्ठा कार्य वै० व० १३ को प्रारम्भ होकर अठाई महोत्सवादि द्वारा बड़े ठाठ से हुआ। वै० सु० १२ को पन्यासजी महाराज विहार कर बम्बई के उपनगरों में विचरे। माटुंगा में रवजी सोजपाल के देरासर में प्रतिमाजी पधराये। मलाड़में सेठ बालूभाई के देरासर में प्रतिमाजी विराजमान की। सं० १९९४ का चातुमास ठाणा संघ के अत्याग्रह से स्वयं विराजे। दादासाहब की जयन्ती-पूजा बड़े ठाठ से हुई। वर्द्धमानतप आयंबिल खाता खोला गया। साहमी वच्छलादि में कच्छी, गुजराती और मारवाड़ी भाइयों का सहभोज नहीं होता था, वह प्रारम्भ हुआ। ठाणा और बम्बई संघ पन्यासजी महाराज को आचार्य पद पर प्रतिष्ठित करने का विचार करता था पर पन्यासजी स्वीकार नहीं करते थे। अन्त में रवजी सोजपाल आदि समस्त श्री संघ के आग्रह से सं० १९९५ फागुण सुदि ५ को बड़े भारी समारोह पूर्वक आपको आचार्य पद से अलंकृत किया गया। अब पन्यास ऋद्धिमुनिजी श्रीजिनयशःसूरिजी के पट्टधर जैनाचार्य भट्टारक श्रीजिनऋद्धिसूरिजी नाम से प्रसिद्ध हुए।

सं० १९९६ में जब आप दहाणु में विराजमान थे तो गणिवर्य श्री रत्नमुनिजी, लब्धिमुनिजी भी आकर मिले। अपूर्व आनन्द हुआ। आपश्री की हार्दिक इच्छा थी ही कि सुयोग्य चारित्र-चूडामणि रत्नमुनिजी को आचार्य पद और श्रीलब्धिमुनिजी को उपाध्याय पद दिया जाय। बम्बई संघने श्री आचार्य महाराज के व्याख्यान में यही मनोरथ प्रकट किया। आचार्य महाराज और संघ की आज्ञा से रत्नमुनिजी और लब्धिमुनिजी पदवी लेने में निष्पृह होते हुए भी उन्हें स्वीकार करना पड़ा। दश दिन पर्यन्त महोत्सव करके श्रीजिनऋद्धिसूरिजी महाराज ने रत्नमुनिजी को आचार्य पद एवं लब्धिमुनिजी को उपाध्याय पद से अलंकृत किया। मिती आषाढ़ सुदि ७ के दिन शुभ मूहूर्त्त में यह पद महोत्सव हुआ।

तदनंतर अनेक स्थानों में विचरण करते हुए आप राजस्थान पधारे और जन्म भूमि चूरु के भक्तों के आग्रह से वहां चातुर्मास किया। उपधान तपके मालारोपण के अवसर पर बीकानेर पधार कर उ० श्रीमणिसागरजी महाराज को आचार्य-पद से अलंकृत किया। फिर नागोर आदि स्थानों में विचरण करते हुए जीर्णोद्धार, प्रतिष्ठादि द्वारा शासनोन्नति कार्य करने लगे।

अन्त में बम्बई पधार कर बोरीवली में संभवनाथ जिनालय निर्माण का उपदेश देकर कार्य प्रारम्भ करवाया। सं० २००८ में आपका स्वर्गवास हो गया। महावीर स्वामी के मन्दिर में आपकी तदाकार मूर्त्ति विराजमान की गई। आपका जीवन वृतान्त श्रीजिनऋद्धिसूरि जीवन-प्रभा में सं० १९९५ में छपा था और विद्वत् शिरोमणि उ० लब्धिमुनिजी ने सं० २०१४ में संस्कृत काव्यमय चरित कच्छ मांडवी में निर्माण किया जो अप्रकाशित है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org